प्रेरितों के काम की पुस्तक का कालानुक्रम

कलीसिया के आरम्भिक दिनों की घटनाओं की तिथियों के सम्बन्ध में, पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए हमारे पास बहुत कम जानकारी है। यहां तक कि प्रेरितों के काम के पहले भाग से सम्बन्धित रूढ़िवादी विद्वानों के कालानुक्रमों में भी बहुत अन्तर है। परन्तु प्रेरितों के काम के पिछले भाग की तिथि के बारे में अधिकतर रूढ़िवादी विद्वानों में बहुत कम मतभेद है, क्योंकि प्रेरितों के काम के इतिहास में कई बाइबल से बाहर की तिथियों को जोड़ा जा सकता है।

1. पहला पिन्तेकुस्त, 30.[1]
2. यरूशलेम की कलीसिया का फैलाव और यरूशलेम के बाहर सुसमाचार प्रचार का आरम्भ (सामरी लोग, कलीसिया), 33/34.
3. शाऊल का मनपरिवर्तन, 34/35.
4. दमिश्क में शाऊल का बचाव, 37.
5. यरूशलेम के बाहर सुसमाचार प्रचार का जारी रहना (कुरनेलियुस का मनपरिवर्तन, अंताकिया में कलीसिया की स्थापना, इत्यादि), 34–43.
6. याकूब की मृत्यु, पतरस का चमत्कारी ढंग से बन्दीगृह से छूटना, और राजा हेरोदेस अग्रिपा प्रथम की मृत्यु, 44.
7. यरूशलेम के लिए अकाल राहत, 46.
8. पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा, 46–48.
9. यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस, 49

गलतियों की पत्री लिखी गई 48/49 ??

10. यहूदियों को रोम से निकाला गया, 49.
11. पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा, 49–52.

1 थिस्सलुनीकियों कुरिन्थुस से लिखी गई, 50.
2 थिस्सलुनीकियों कुरिन्थुस से लिखी गई, 50/51

12. पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा और यरूशलेम को जाना, 52–57.

(कुछ लोग गलतियों की पत्री के लिखे जाने का समय इस प्रकार बताते हैं।)
1 कुरिन्थियों इफिसुस से लिखी गई, 54/55.

2 कुरिन्थियों मकदूनिया से लिखी गई, 55/56.
रोमियों की पत्री कुरिन्थुस से लिखी गई, 56.

13. यरूशलेम में पौलुस की गिरफ़्तारी और यरूशलेम और कैसरिया में कैद, 57–59.
14. पौलुस का रोम में जाना, 59–60.
15. रोम में पौलुस की पहली कैद, 60–62.

इफिसियों की पत्री रोम से लिखी गई।
कुलुस्सियों की पत्री रोम से लिखी गई।
फिलेमोन की पत्री रोम से लिखी गई।
फिलिप्पियों की पत्री रोम से लिखी गई।

– प्रेरितों के काम की पुस्तक यहां समाप्त होती है –

16. पौलुस का कैद से छूटना और (स्पेन और अन्य स्थानों को) अन्य यात्राएं, 63–66 (?)

1 तीमुथियुस मकदूनिया से लिखी गई, 64/65 (?)
तीतुस मकदूनिया से लिखी गई, 65/66 (?)

17. पौलुस की दूसरी गिरफ़्तारी और उसकी हत्या, 66/67 (?)

2 तीमुथियुस रोम से लिखी गई, 66/67 (?)

पादटिप्पणियां

[1] आरम्भिक टीकाकार प्रेरितों अध्याय 2 की घटनाओं को 33 या 34 ईस्वी में हुआ बताते थे। अब यह सामान्यतः माना जाने लगा है कि जब लोगों ने यीशु के जन्म से तिथि निर्धारित करनी आरम्भ की, तो उन्होंने गणना गलत आरम्भ की। अपने हवाले के लिए वे जिस बात का उपयोग करते थे वह कई वर्ष पहले हुई वह जनगणना थी जिसके कारण यूसुफ और मरियम को बैतलहम में जाना पड़ा था। परिणामस्वरूप, हमारे कैलेन्डरों में तीन या चार वर्ष की भिन्नता है। पहला पिन्तेकुस्त यीशु के जन्म के लगभग 33 वर्ष बाद हुआ, परन्तु उस गलती के कारण, हमारे कैलेन्डरों के अनुसार वह तिथि लगभग 30 ईस्वी थी।